IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

IJARSCT

Impact Factor: 4.819

Volume 10, Issue 1, October 2020

lu~ 1950 ds ckn Hkkjr esa lkEiznkf;drk

M,- mn;Hkku ;kno

vflLVsV izksQslj] fgUnh

राजकीय महिला महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़

स्वतंत्र भारत के केन्द्रीयकृत ढॉचे में क्षेत्रीयता के उभार ने अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के बोध को गहरा किया। उस बोध से हिन्दू–मुसलमान सम्बन्धों में तीखे उभार आए। जवाहरलाल नेहरू के धर्मनिरपेक्षता का आश्वासन बहुत प्रभावी न रहा। वह दिन प्रतिदिन बिगड़ता ही गया। 1960 के दशक तक सामाजिक आर्थिक संरचना के असमान विकास ने तथा स्वतंत्र भारत के स्वर्णिम भविष्य के स्वप्न भंग ने असहज स्थिति पैदा की। मध्य प्रदेश के जबलपुर शहर में 1962 ई0 में भयावह दंगे हुए और हिन्दू – मुसलमान एकता के सूत्र तोड़नें के प्रयास किए गए। जवाहर लाल नेहरू इन दंगों से बेहद व्यथित थे। इन दंगों ने उसी वर्ष चीन से हुए युद्ध ने नेहरू जी के मानवतावादी विचारों को ठेस पहुचाई थी। हिन्दू– मुस्लिम भाई–भाई एवं हिन्दी–चीनी भाई –भाई की अवधारणा देखते–देखते खण्डित हो रही थी।

15 अगस्त –1952 को स्वतंत्रता दिवस के भाषण में उन्होंने देश के सामनें मौजूद खतरों का जिक्र किया उन्होनें कहा साम्प्रदायिकता देश को केवल ज्यादा कमजोर कर सकती है। धार्मिक कट्टरपंथी और साम्प्रदायिक नेताओं ने सबक लेने से इन्कार कर दिया। ''हमें साम्प्रदायिक तत्वों और स्वार्थी लालची लोगों से सतर्क रहना है जो झूँठ और पाखण्ड देश को नुकसान पहुॅचाते है। यदि इन तीन चीज को कभी नहीं रोका गया तो हमारे देश को बर्बाद कर देंगे।[1]

स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद पहले दशक की ये आधिकारिक घोषणाएँ दर्शाती हैं, कि स्वातंत्रयोत्तर भारत में साम्प्रदायिकता ने अपना भद्दा सिर उठा लिया था। देश के विभाजन से साम्प्रदायिकता की समस्या सुलझने के बजाय और बढ़ गयी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात लगातार दंगे होते रहे। ''सन् 1950 में पं0 बंगाल में गोरा बाजार, दमन आदि में दंगे फैल गए। 1954 में दंगे हुए। 1957 में 58 दंगे पंजीकृत हुए। 1959 में साम्प्रदायिकता की 4 घटनाऍं हुई 1960 में 26 घटनाऍं घटित हुई।''[2]

1962 के जबलपुर के दंगों ने पूरे राष्ट्र को झकझोर दिया। यह आजाद भारत में पहला बड़ा साम्प्रदायिक दंगा था। इसके बाद और भी परिस्थितियाँ आती गयी जिससे हिन्दू–मुस्लिम की दूरियॉं बढ़ती गयीं। सन् 1965 ई0 में पाकिस्तान ने भारत पर फिर से आक्रमण कर दिया। पाक आक्रमण ने हिन्दू – मुसलमान रिश्तों को प्रभावित किया। अवसरवादी राजनीतिज्ञों ने इस आक्रमण को एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण न मानकर धार्मिक आक्रमण बताया। यों भी पाकिस्तानी सरकार अपने आक्रमणों का औचित्य सिंद्ध करने के लिए तथा सैनिकों का उत्साह बढ़ाने एवं पाकिस्तानी जनता के असंतुष्ट मनः स्थिति को बहकाने के लिए ऐसे तरीके अपनाया करती थी। पाकिस्तानी सरकार इसे जेहाद नाम देती थी जिसे सीधे तौर पर मुसलमानों से सम्बद्ध मान लिया जाता था। लेकिन 1965 ई0 के युद्ध में जब वीर अब्दुल हमीद जैसे मुसलमानों ने भी राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हो पाकिस्तानी सेवा को परास्त करनें में महती भूमिका निभाई एवं वीरगति को प्राप्त हुए तो इस प्रचार को विराम मिला कि सभी मुसलमान पाकिस्तान के पक्षधर है। और उनकी निष्ठा पाकिस्तान के साथ है। ''जहाँ आजादी के बाद का भारत का समाज और राजनीति धर्म निरपेक्ष रहा है वही सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का तर्क साम्प्रदायिकता के प्रसार के लिए अनुकूल जमींन तैयार करता रहा है।''[3]

1. द स्टेटसमैन, दिल्ली अगस्त 16, 1952
2. असगर अली इंजीनियर, भारत में साम्प्रदायिकता इतिहास और अनुभव पृ0– 110
3. रजनी पामदत्त–आजादी के बाद का भारत, पृ0 57

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 10, Issue 1, October 2020
Impact Factor: 4.819

1962 में चीन युद्ध के दौरान और 1965 में पाकिस्तान युद्ध के दौरान भी जनसंघ की लोक प्रियता में वृद्धि हुयी, क्योंकि इसको कांग्रेस से ज्यादा लोकप्रिय समझा गया। जनसंघ के नेता काफी आश्वस्त थे कि चीन और पाकिस्तान के प्रति उनके कड़े रवैये से उनको लोकप्रियता हासिल हुई है। जनसंघ के नेताओं के इन दो युद्धों के दौरान राष्ट्रभक्ति की बढ़ी हुई भावनाओं को अपने पक्ष में भुनाया। राष्ट्रीय स्तर पर अधिक सीटें जीत कर इस संगठन ने अपनी महत्वपूर्ण स्थिति बना ली। सितम्बर 1969 में इसी संगठन के प्रोत्साहन पर गुजरात में व्यापक साम्प्रदायिक दंगा हुआ। जनसंघ ने इस दंगे पर जमकर राजनीति की। '' दिसम्बर 1969 में पटना अधिवेशन में 'मुसलमानों का भारतीयकरण' का प्रस्ताव पारित किया। जिसने आगे इस विचार को मजबूत किया कि भारत में रहने वाले मुसलमान सच्चे भारतीय नहीं और इनकी वफादारी भारत से कहीं बाहर हैं।''[4] इस प्रकार देखा जाय तो राजीनतिक स्तर पर भारत को लगातार बाँटने का ही प्रयास किया गया। इससे राजनेताओं को तात्कालिक लाभ पहुँचने लगा।

1969ई0 के अहमदाबाद और गुजरात दंगो के बाद 1970ई0 में भिवंडी और जलगांव में दंगे हुए। जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की सहायता एवं उकसाने से शिवसेना ने इन दंगों में मुख्य भूमिका निभाई। इस तरह साठ के दशक के अन्तिम चरण में साम्प्रदायिक हिंसा का घटिया से घटिया जो रूप नजर आया, यह देश में पहले कभी देखने मे नहीं आया। सन् 1971 में भारतीय सेना ने ढाका में प्रवेश किया और पाकिस्तानी सेना को हरा दिया और बंग्लादेश का जन्म हुआ।

धर्म के आधार पर संस्कृति को बाँटने का तर्क इतना बेमानी था, कि इस्लामिक राष्ट्र के रूप में अलग हुआ पाकिस्तान भाषाई एवं सांस्कृतिक भिन्नता के कारण सन् 1971 ई0 में दो भागों में विभाजित हो गया अलगाव वादी आन्दोलन चला रहे पूर्वी पाकिस्तान के जननेता मुजीबउर्रहमान का भारत ने पक्ष लिया और एक भीषण संग्राम के बाद पाकिस्तानी सेना ने भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।इस विजय ने भारत में फांसीवादी खतरा पैदा किया। ''पाकिस्तान को तोड़ने ओर बांग्लादेश निर्माण में भूमिका के कारण श्रीमती इन्दिरा गॉधी की लोकप्रियता उच्च शिखर पर थी। यहॉ तक कि जनसंघ नेता वाजपेयी ने संसद में उन्हें दुर्गा का अवतार कहा। अब उसकी राजनीतिक हैसियत उतनी ही बुलन्द थी जितनी कि साठ के अन्तिम चरण में बैंको के राष्ट्रीयकरण करने में थी। सामान्यतः भारतीय मुसलमान पाकिस्तान के टूटने पर खुश नही थे, लेकिन उन्होनें अपनी इस नाखुशी को कभी भी व्यक्त नहीं किया और साम्प्रदायिक स्थिति शान्तिपूर्ण बनी रही''[5]

पाकिस्तान का विभाजन एक अलगाववादी मानसिकता छोड़ गया। अलग–अलग विद्वानों के अलग–अलग मत है। ''राही मासूम रजा ने बांग्लादेश के गठन एवं पाकिस्तान के विभाजन को धार्मिक आधार पर किए गए विभाजन का परिणाम माना था। उनको इसका दुःख था कि बांग्लादेश को अलग होने के बाद भारत में विलय कर लेना चाहिए था क्योंकि बांग्लादेश का गठन 47 के विभाजन की असहमति से हुआ था।''[6] इससे हिन्दू –मुसलमान सम्बन्धों की आतंरिक संरचना तनावपूर्ण नियन्त्रण की तुगलकी नीति से सर्वाधिक प्रभावित मुसलमान रहे। 1977 में इन्दिरा गॉधी के हार के पीछे उपरोक्त राजनीति अपने चरम पर थी। दोनों ही अतिवादी एवं अपने समुदाय के तथा कथित हिमायती संगठन जनसंघ एवं जमात–ए–इस्लामी एक मंच पर आये और सांस्कृतिक अभिन्नता की चर्चा की। जनसंघ ने स्वीकार किया कि उसने मुसलमानों के प्रति गलत धारणा बदल दी है और वे भी सच्चे राष्ट्र भक्त हैं। हिन्दू– मुसलमान सौहार्द का यह स्वर्णिम समय था, लेकिन यह छद्म लम्बे समय तक कायम न रह सका। जनता सरकार के पतन ने इनकी एक जुटता भंग की और वैमनस्यता का दौर पुनः शुरू हुआ। राजीव गॉधी की उदार साम्प्रदायिक नीतियों एवं शहबानों प्रकरण में समान नागरिक संहिता के प्रश्न पर जमकर राजनीति की गई। और राजनीति और गहराती गयी।

4. असगर अली इंजीनियर – भारत में साम्प्रदायिकता इतिहास और अनुभव पृ0115
5. असगर अली इंजीनियर – भारत में साम्प्रदायिकता : इतिहास और अनुभव पृ0 115
6. राही मासूम रजा, सिनेमा और संस्कृति , पृ0 124–125

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 10, Issue 1, October 2020
Impact Factor: 4.819

जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अत्यधिक प्रभाव के कारण साम्प्रदायिकता और साम्प्रदायिक हिंसा में वृद्धि नजर आई। धार्मिक आधार पर जन भावनाओं को उभारने का खेल तब अपने चरम पर था जब 1991 में एक विवादास्पद इमारत को कुछ उपद्रवियों ने तोड़ डाला (बाबरी विध्वंस)। इस प्रकरण से देश व्यापी अराजकता की स्थिति बनी। बाबरी विध्वंस। इस प्रकारण से देशव्यापी अराजकता स्थिति बनी। बाबरी विध्वंस ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दू –मुसलमान द्वन्द की धार को तीखा किया। बीते वर्ष गुजरात हिन्दू –मुसलमान तनाव से गुजरा साम्प्रदायिकता की विभीषिका ने बरसों के सौहार्द को नष्ट कर दिया। गुजरात के दंगे ने उस दूरी को और बढ़ा दिया। यह वह समय है आमतौर भारतीय अपने धर्मों को अलग रखकर साथ–साथ रहना चाहता है तभी राजनीतिज्ञों द्वारा धार्मिक भावनाओं से खेलते हुए ए दंगे करवा दिये जाते हैं जो एक बार फिर हिन्दू –मुसलान को दूर कर देते हैं।

एक तरह से देखा जाय तो साम्प्रदायिकता के प्रति सत्तासीन सरकारों का ढुलमुल रवैया एवं अस्पष्ट नीति इन सम्प्रदायों की राजनीति करने वाले समूहों के लिए पोषण का काम करती रही हैं। विकास के पूँजीवादी तरीके ने आर्थिक असमानता का जो कुचक्र तैयार किया उससे मध्यवर्ग में अस्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा शुरू हुई। विकास की गति जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में धीमी ही रही। कहना न होगा कि मुसलमान समाज में जनसंख्या वृद्धि दर आज भी सर्वाधिक है। यह हमारी सरकारों का ढुलमुल रवैया है। जिसकी वजह से हिन्दू और मुसलमान और दूर होते जा रहे हैं। सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में जो अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा आई उससे स्वतंत्रता के बाद नौकरियों के अवसरों के अचानक बढ़ जाने के बाद भी 1960 के दशक के मध्य तक निम्न मध्यवर्ग में बेरोजगारी बहुत बढ़ गई थी। दिशाहीन शिक्षित युवकों के लिए अवसरों की कमी ने समाज में अराजकता के लिए जमींन पैदा की। कृषि एवं उद्योग क्षेत्र में भी असमानता ने असंतोष का वातावरण बनाया। वास्तव में भारतीय समाज की बुनावट ही कुछ ऐसी है कि छोटे एवं सामान्य कारक भी सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न करने में सफल हो जाते है। कुल मिलाकर यह कहना ज्यादा प्रासंगिक होगा कि सदियों से साथ रहते–रहते हिन्दू– मुसलमान ने तमाम विभिन्नताओं के रहते हुए भी सांस्कृतिक रूप से एक दूसरे को आत्मसात किया। यही कारण है कि उ0प्र0, बिहार का मुसलमान उ0प्र0, बिहार के हिन्दू से कहीं अधिक साम्य संस्कृति का साझीदार है। न कि बंगाल या पंजाब का मुसलमान। संस्कृति कि अभिन्नता का ही प्रभाव था कि विभाजन के बाद अधिकांश मुसलमानों ने अपनी जड़ों से कटना पसन्द नहीं किया। यह लक्षित किया गया कि पाकिस्तान का चुनाव अभिजात वर्ग के मुसलमानों ने ही अधिकतर किया।

तमाम अभिन्नताओं के बावजूद भी इस समय दे”ा में सारे रीति–रिवाज, परम्पराएँ रूढ़ियाँ एवं रहन सहन के तरीके दोनों समुदायों के लिए सुख में साझीदार बने। आपसी सौहार्द एवं भाईचारे के वातारण को अपने स्वार्थ के कारण अभिजात वर्ग तनावपूर्ण बना देता था। उसके बहकावे में मध्यवर्ग सहज ही आ जाता है और प्रभावित सर्वाधिक रूप से दलित एवं निम्न तबका होता है।

वस्तुतः उपरी संस्तर के लोगों के स्वार्थ का दुष्परिणाम भुगत लेने के बाद निम्नवर्ग पुनः सहज व्यापार में ढल जाता है एवं रिश्ते सामान्य हो जाते हैं। वैसे भी दंगों का क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र नहीं होता है। शहरी या कस्बाई संस्कृति इसके प्रचार–प्रसार के लिए अनुकूल पड़ती है।